आई सिंह पे सवार मईया

आई सिंह पे सवार, मईया ओढ़े चुनरी ॥
ओढ़े चुनरी, मईया ओढ़े चुनरी ।
आई सिंह पे सवार, मईया ओढ़े चुनरी ॥

आदिशक्ति है मात भवानी, जय दुर्गे मॉ काली ।
बड़े-बड़े राक्षस संहारे, रणचंडी मतवाली ॥
करती भक्तों का उद्धार, मईया ओढ़े चुनरी ॥,
आई सिंह पे सवार,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

महिषासुर सा महाँबली, देवों को खूब सताया ।
छीन लिया इन्द्रासन और, देवों को मार भगाया ॥
करी देवों ने पुकार, मईया ओढ़े चुनरी ॥,
आई सिंह पे सवार,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

दुर्गा का अवतार लिया, झट महिषासुर संहारी ।
दूर किया देवों का संकट, लीला तेरी न्यारी ॥
किया देवों पे उपकार, मईया ओढ़े चुनरी ॥,
आई सिंह पे सवार,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

जो कोई जिस मनसा से माता, द्वार तुम्हारे आता ।
हर इच्छा होती है पूरण, मुँह मॉगा फल पाता ॥
तेरा गुण गावे संसार, मईया ओढ़े चुनरी ॥,
आई सिंह पे सवार,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

कष्ट अनेकों मुझको घेरे, कौन हरे दुख मेरे ।
नाम तेरा रटता हूँ मईया, मैं हर सॉझ सवेरे ॥
सेवक करता है पुकार, मईया ओढ़े चुनरी ॥,
आई सिंह पे सवार,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

अपलोडर- अनिलरामूर्तीभोपाल

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/21200/title/aai-singh-pe-swar-maiya

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |